# पूर्ण प्रतिस्पर्धा में उत्पादक/ फर्म का सिद्धांत

# Theory of the Firm under Perfect Competition

## आगम की धारणाएं (Concepts of Revenue)

***आगम का अर्थ:***

आगम का अभिप्राय उस विक्रय राशि से है जिसे फर्म अपने उत्पादन बेचकर प्राप्त करती है।

**डूले** के अनुसार, “एक फर्म का आगम उसकी बिक्री प्राप्ति या वस्तुओं की बिक्री से मिलने वाली मौद्रिक प्राप्तियां है”।

प्रत्येक फर्म का उद्देश्य अधिकतम लाभ कमाना होता है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

**यहाँ उत्पादन लागत और विक्रय राशि के अंतर को लाभ कहते हैं।**

इस प्रकार,

**लाभ= आगम - लागत**

अर्थशास्त्र के सभी विषयों एवं कक्षाओं के नोट्स, प्रश्नोत्तर, सैंपल पेपर, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, विगत वर्षों के प्रश्नपत्र, अभ्यास प्रश्नपत्र (हिंदी या अंग्रेजी माध्यम) के PDF आपको www.theeconomicsguru.com पर मिल जायेंगे।

इसके साथ ही सभी हिंदी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के लिए Free **LIVE CLASS** भी उपलब्ध है, हमारे **YOUTUBE CHANNEL "THE ECONOMICS GURU"** पर । अभी **subscribe** कर लीजिये और ज्यादा से ज्यादा **शेयर** कर दीजिये अपने दोस्तों के बीच।

किसी भी प्रकार की समस्या के लिए आप हमसे सम्पर्क कर सकते है, YOUTUBE के कमेंट बॉक्स में कमेन्ट करें या वेबसाइट के Email वाले Option में जाकर **Email** करे या WhatsApp कर सकते है Website में लिंक दिया गया है।

धन्यवाद

नकुल ढाली

The Economics Guru

लाभार्थी बोर्ड:

CBSE, UK Board, UP Board, Bihar Board, MP Board, CG Board, Rajasthan Board, Haryana Board

साथ ही **BA; B.COM; MA** के सभी SEMESTER लिए भी अध्ययन सामग्री उपलब्ध है।

अभी VISIT करें www.theeconomicsguru.com

EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

**Subscribe** my **YOUTUBE** channel **THE ECONOMICS GURU**

**Follow me:**

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

**Facebook**- *Nakul Dhali*

**Instagram**- *@dhali_sir*

# आगम की प्रमुख धारणाएं

1. कुल आगम (Total Revenue )
2. सीमांत आगम (Marginal Revenue )
3. औसत आगम (Average Revenue )

## कुल आगम (Total Revenue)

किसी फर्म का कुल आगम वस्तु की एक इकाई कीमत तथा कुल विक्रय की गई इकाइयों के गुणनफल द्वारा प्राप्त किया जाता है।

डुले के अनुसार, **"कुल आगम एक फर्म द्वारा प्राप्त बिक्री राशि, प्राप्तियों या आगम का जोड़ है"।**

कुल आगम = कुल बिक्री से प्राप्त राशि

**कुल आगम = बिक्री की इकाई × प्रति इकाई मूल्य**

**TR = Qx × Px**

***उदाहरण:***

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

**एक विक्रेता वस्तु की एक इकाई ₹10 में बेचता है, यदि वह 500 इकाईया बेचता है, तब कुल आगम होगा।**

कुल आगम = ₹10 × 500

= ₹5000

## सीमांत आगम (Marginal Revenue)

उत्पादन य फर्म वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई की बिक्री से जो अतिरिक्त आगम प्राप्त होता है, उसे सीमांत आगम कहते हैं।

दूसरे शब्दों में, ***सीमांत आगम कुल आगम में परिवर्तन की दर को बताता है।***

**फर्गुसन** के अनुसार, **"एक फर्म द्वारा अपने उत्पादन की एक इकाई कम या अधिक बेचने से कुल आगम में जो परिवर्तन आता है, उसे सीमांत आगम कहा जाता है"।**

$$MR = TR_n - TR_{n-1}$$

## औसत आगम (AVERAGE REVENUE)

औसत आगम से अभिप्राय है उत्पादन की प्रति इकाई बिक्री से प्राप्त होने वाला आगम।

इस प्रकार कुल आगम को बिक्री की गई इकाइयों से भाग देने पर औसत आगम प्राप्त होता है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

$$AR = \frac{TR}{Q}$$

***मैकोनल*** के अनुसार, **"किसी वस्तु की बिक्री से प्राप्त होने वाला प्रति इकाई आगम औसत कहलाता है"।**

औसत आगम सदैव वस्तु की प्रति इकाई कीमत को व्यक्त करता है।

## औसत आगम को मांग वक्र क्यों कहते हैं?

औसत आगम से अभिप्राय वस्तुओं की बिक्री से बिक्रेता को प्राप्त प्रति इकाई आय से है। दूसरी ओर कीमत से आशय क्रेता द्वारा वस्तु को खरीदने पर किया गया प्रति इकाई भुगतान।

*क्योंकि विक्रेता को वही प्राप्त होता है जो क्रेता भुगतान करता है अतः प्रति इकाई आगम और प्रति इकाई कीमत एक ही बात है।*

यही कारण है कि औसत आगम वक्र फर्म की वस्तु का मांग वक्र भी एक ही होता है।

औसत आगम और कीमत एक ही है, अर्थात् औसत आगम को ही कीमत कहते हैं।

औसत आगम रेखा ही मांग रेखा होती है।

## विभिन्न बाजारों में आगम वक्र

### पूर्ण प्रतियोगिता से आगम बक्र

पूर्ण प्रतियोगिता में वस्तुओं की मांग पूर्णतः लोचदार होती है। क्योंकि पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म कीमत प्राप्तकर्ता होती है। उद्योग द्वारा वस्तु की कीमत का निर्धारण किया जाता है और इसकी निर्धारित कीमत को फर्म दिया हुआ मानकर वस्तु की कितनी भी मात्रा का उत्पादन या विक्रय कर सकती है।

*पूर्णलोचदार मांग वाले पूर्ण प्रतियोगिता, बाजार में औसत आगम (AR) तथा सीमांत आगम (MR) हमेशा समान होते हैं।*

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

पूर्ण प्रतियोगिता में औसत आगम (AR) तथा सीमांत आगम (MR) परस्पर बराबर होते हैं तथा यह रेखा X अक्ष के समानांतर एक पड़ी सीधी रेखा के रूप में होती है।

| बिक्री की मात्रा (Q) | प्रति इकाई कीमत (P/AR) | कुल आगम (TR) | सीमांत आगम (MR) |
|---|---|---|---|
| 1 | 20 | 20 | 20 |
| 2 | 20 | 40 | 20 |
| 3 | 20 | 60 | 20 |
| 4 | 20 | 80 | 20 |
| 5 | 20 | 100 | 20 |
| 6 | 20 | 120 | 20 |

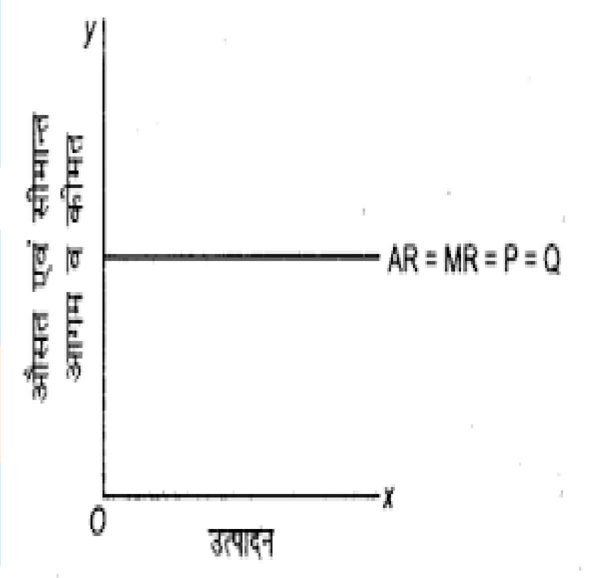


## एकाधिकार (MONOPOLY) में आगम वक्र

एकाधिकार की अवस्था में औसत आगम वक्र तथा सीमांत आगम वक्र बाएँ से दाएँ नीचे की ओर गिरते हुए होते हैं।

THE ECONOMICS GURU

अर्थात यदि एकाधिकारी वस्तु की अधिक मात्रा का विक्रय करना चाहता है तो उसे वस्तु की कीमत कम करनी पड़ेगी। इसके विपरीत, यदि एकाधिकारी वस्तु की अधिक कीमत लेना चाहे तो वह कम मात्रा का विक्रय कर सकेगा।

इस प्रकार एकाधिकार में वस्तु की मांग तथा कीमत में ऋणात्मक संबंध पाया जाता है।

इस प्रकार एकाधिकार में सीमांत आगम (MR) वक्र तथा औसत आगम (AR) वक्र दोनों ही नीचे की ओर गिरते हुए होते हैं।

| बिक्री की इकाइयों (Q) | कुल आगम (TR) | औसत आगम (AR) | सीमांत आगम (MR) |
|---|---|---|---|
| 1 | 60 | 60 | 60 |
| 2 | 100 | 50 | 40 |
| 3 | 130 | 43.33 | 30 |
| 4 | 150 | 37.5 | 20 |
| 5 | 150 | 30 | 0 |
| 6 | 140 | 23.33 | -10 |
| 7 | 120 | 17.14 | -20 |

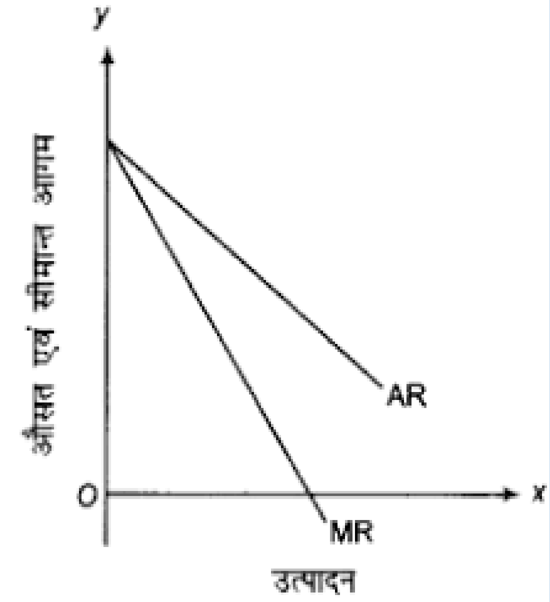


## एकाधिकारी प्रतियोगिता में आगम वक्र

एकाधिकारी प्रतियोगिता बाजार दशा में प्रतियोगी फर्में समरूप वस्तुए उत्पादित न करके निकट स्थानापन्न वस्तुओं का उत्पादन करती है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

ऐसी बाजार दशा में एक फर्म कीमत घटाकर दूसरी फर्मों के ग्राहक छीन सकती है। और इसी प्रकार एक फर्म द्वारा कीमत बढ़ाए जाने पर उसके अनेक ग्राहक दूसरे फर्म की ओर चले जाएंगे।

ऐसी स्थिति में AR तथा MR रेखाएँ बाएँ से दाएँ नीचे गिरती हुई होती है। लेकिन एकाधिकारी फर्म की तुलना में चपटी होती है।

## कुल आगम (TR) तथा सीमांत आगम (MR) के बीच संबंध

MR अतिरिक्त आगम है जो उत्पादन की एक अतिरिक्त इकाई के बेचने से प्राप्त होता है। उत्पादन की सभी इकाइयों के सीमांत आगम (MR) के जोड़ को कुल आगम (TR) कहते हैं।

**अतः, MR= $TR_n$- $TR_{n-1}$**

MR वह दर है जिसपर कुल आगम में वृद्धि होती है:

1. यदि MR बढ़ रहा है TR में बढ़ती दर से वृद्धि होती है।
2. यदि MR घट रहा है, किंतु धनात्मक है तब TR में घटती दर से वृद्धि होती है।
3. जब MR शून्य होता है तब TR अधिकतम होता है।
4. जब MR ऋणात्मक होता है तब TR घटता है।

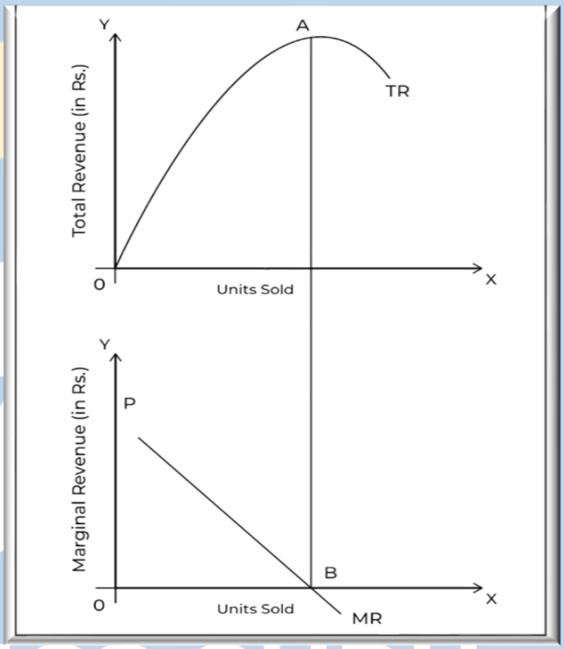


THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

## औसत आगम (AR) तथा सीमांत आगम (MR) के बीच संबंध

1. यदि औसत आगम (AR) समान या स्थिर है तब AR=MR (पूर्ण प्रतियोगिता की दशा में )

2. यदि AR घट रहा है तब AR>MR (यह स्थिति एकाधिकार तथा एकाधिकारी प्रतियोगिता की दशा में)
3. MR ऋणात्मक हो सकता है, परन्तु AR नहीं। औसत आय आय आगम (AR) वस्तु की प्रति इकाई कीमत को कहते है जो कभी भी ऋणात्मक नहीं हो सकती।

## **उत्पादक का संतुलन (Producer's Equilibrium)**

### **उत्पादक कौन है?**

उत्पादक एक आर्थिक एजेंट है जो उत्पत्ति के साधनों को एकत्रित करके अधिकतम संभव लाभ अर्जित करने के उद्देश्य से वस्तुओं का उत्पादन करता है।

उत्पादक का अधिकतम लाभ अर्जन का उद्देश्य आगम एवं लागत के अंतर पर आधारित है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

क्योंकि,

**कुल लाभ = कुल आगम - कुल लागत**

प्रत्येक उत्पादक का उद्देश्य अपने लाभ को अधिकतम करना एवं हानि को न्यूनतम करना होता है।

## उत्पादक या फर्म का संतुलन

एक फर्म / उत्पादक उस समय संतुलन की स्थिति में होती है जब वह अपने वर्तमान उत्पादन की मात्रा से संतुष्ट होती है।

***एक उत्पादक उस समय साम्य में होता है जब उसकी आय अधिकतम होती है तथा हानियां न्यूनतम होती है।***

इस प्रकार एक फर्म साम्य की स्थिति में तब कही जाएगी जबकि उसके कुल उत्पादन की मात्रा में परिवर्तन की कोई परिवर्तन नहीं हो।

अर्थात,

साम्यावस्था में फर्म उत्पादन की वह मात्रा या कीमत निश्चित करेगी जिस पर उसको अधिकतम लाभ या अधिकतम शुद्ध आय प्राप्त हो।

***मैकोनल*** के अनुसार, ***"अल्पकाल में एक फर्म उस समय संतुलन में होती है जब उस मात्रा का उत्पादन करती है जिस पर उसके लाभ अधिकतम होते हैं तथा हनियां न्यूनतम होती है"।***

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

## उत्पादक संतुलन की रीतियाँ

उत्पादनक / फर्म संतुलन की दो प्रमुख रीतियां प्रचलन में है:

1. कुल आगम (TR) एवं कुल लागत (TC) रीति
2. सीमांत आगम (MR) एवं सीमांत लागत (MC) रीति

## कुल आगम एवं कुल लागत वक्र रीति द्वारा उत्पादक का संतुलन

इस रीति में उत्पादन के भिन्न भिन्न स्तरों पर कुल आगम एवं कुल लागत का अंतर ज्ञात किया जाता है। कुल लागम और कुल लागत का अंतर कुल लाभ को बताता है।

***लाभ = कुल आगम - कुल लागत***

*उत्पादन के अलग अलग स्तरों पर TR तथा TC का अंतर अलग अलग होता है। एक उत्पादक का कुल लाभ तभी अधिकतम होता है जब TR तथा TC का अंतर अधिकतम हो।*

अतः, उत्पादक का संतुलन उत्पादन के उस स्तर पर होता है जब कुल आगम एवं कुल लागत का अंतर अधिकतम हो जाए।

## पूर्ण प्रतियोगिता में उत्पादक अथवा फर्म का संतुलन

पूर्ण प्रतियोगिता में एक फर्म दी गई कीमत पर वस्तु की कितनी ही मात्रा का उत्पन्न कर सकती है, क्योंकि पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म कीमत, प्राप्तकर्ता एवं मात्रा नियोजक होती है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

पूर्ण प्रतियोगिता में कुल आगम (TR) वक्र बाएँ से दाएँ चढ़ती हुई सीधी रेखा होगा, जबकि कुल लागत (TC) वक्र पहले कम होता है, फिर ऊपर की ओर चढ़ता हुआ होता है।

***जिस बिंदु पर TR, TC से अधिकतम होगा वही बिन्दु उत्पादक संतुलन का होता है।***

चित्र

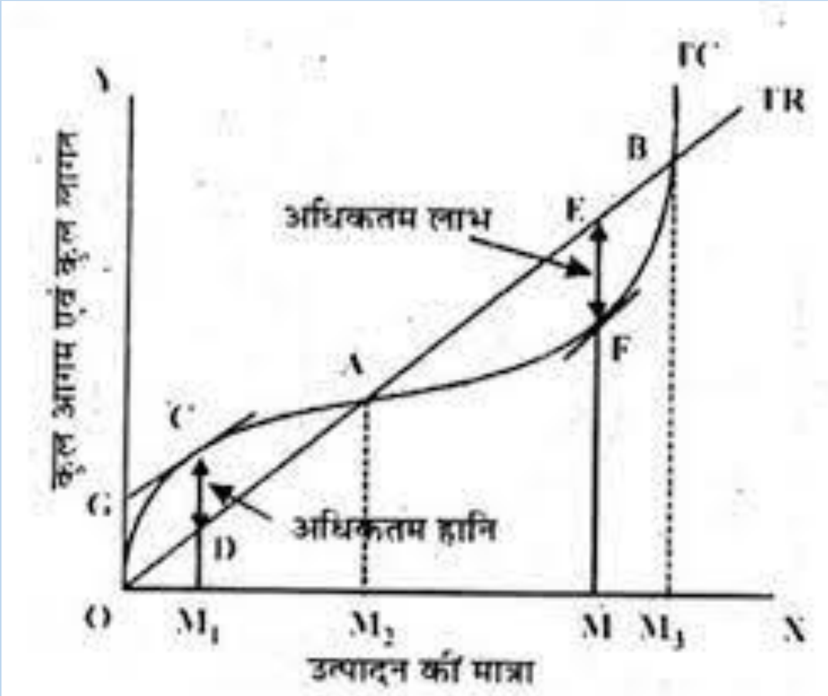


## सीमांत आगम (MR) एवं सीमांत लागत (MC) वक्र रीति द्वारा उत्पादक का संतुलन

इस रीति में विभिन्न उत्पादन स्तरों पर सीमांत आगम (MR) तथा सीमांत लागत (MC) का अंतर ज्ञात किया जाता है।

***सीमान्त आगम तथा सीमांत लागत का अंतर लाभ को प्रदर्शित करता है।***

जब सीमांत आगम (MR) तथा सीमांत लागत (MC) से अधिक है तब उत्पादन में वृद्धि लाभप्रद है। जब MR तथा MC बराबर होते है उस बिंदु पर लाभ अधिकतम होता है।

और इसे समविच्छेद बिंदु कहा जाता है। जबकि जब सीमांत लागत सीमांत आगम से अधिक हो तब उत्पादक को हानि होगी।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

इस प्रकार पूर्ण प्रतियोगिता में उत्पादनक या फर्म के संतुलन के लिए दो प्रमुख शर्तें हैं:

1. **MR = MC**
2. **सीमांत लागत वक्र (MC) सीमांत आगम वक्र (MR) को नीचे से काटे।**

चित्र

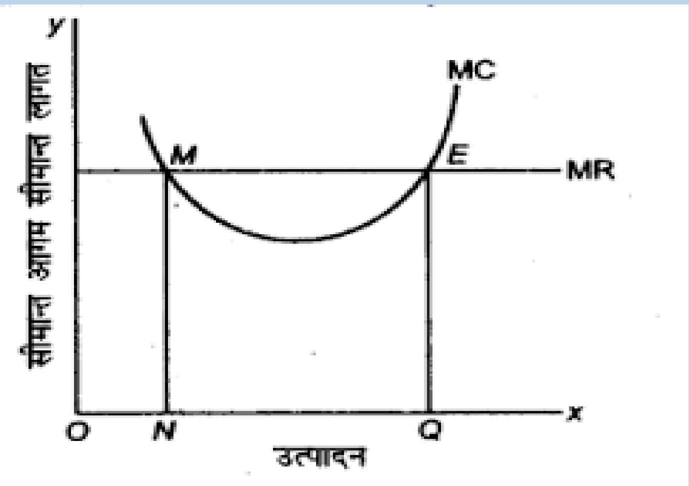


## पूर्ति का अर्थ (Meaning of Supply)

किसी वस्तु की पूर्ति से अभिप्राय वस्तु की उन मात्राओं से हैं जिन्हें एक विक्रेता विभिन्न संभव कीमतों पर एक निश्चित समय में बेचने को तैयार रहता है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

### परिभाषाएं (Definitions):

**थॉमस** के अनुसार, "वस्तुओं की पूर्ति वह मात्रा है जो एक बाजार में किसी निश्चित समय पर विभिन्न कीमतों पर बिकने के लिए प्रस्तुत की जाती है"।

## पूर्ति तथा स्टॉक में अंतर

स्टॉक वस्तुओं की वह मात्रा जो किसी एक विशेष समय बाजार में विक्रेताओं के पास मौजूद हैं,

जबकि पूर्ति वह मात्रा है जिसे किसी निश्चित समय में किसी निश्चित कीमत पर विक्रेता बेचने को तत्पर हैं।

## पूर्ति के प्रकार (Types of Supply)

1. व्यक्तिगत पूर्ति (Individual Supply)
2. बाजार पूर्ति (Market Supply)

## व्यक्तिगत पूर्ति (Individual Supply)

वस्तु की वह मात्राएँ जिन्हें एक विक्रेता विभिन्न संभव कीमतों पर एक निश्चित समय पर बेचने को तैयार रहता है व्यक्तिगत पूर्ति कहते हैं।

THE ECONOMICS GURU

## बाजार पूर्ति (Market Supply)

किसी वस्तु की बाजार में सभी उपस्थित फर्मो द्वारा या विक्रेता के द्वारा की गयी पूर्ति जो उस वस्तु का उत्पादन यह बिखरे करती है बाजार पूर्ति कहलाती है। बाजार पूर्ति को उद्योग पूर्ति भी कहा जाता है।

## पूर्ति तालिका (Supply Schedule)

विभिन्न कीमतों पर बाजार में वस्तु की बेची जाने वाली मात्राओं को यदि तालिका में व्यक्त कर दिया जाए तो इससे पूर्ति तालिका कहते हैं।

**पूर्ति तालिका दो प्रकार की होती है:**

1. व्यक्तिगत पूर्ति तालिका
2. बाजार पूर्ति तालिका

## व्यक्तिगत पूर्ति तालिका (Individual Supply Schedule)

एक विक्रेता किसी समय अवधि विशेष में विभिन्न कीमतों पर वस्तुओं की जितनी मात्रा बाजार को बेचने को तैयार रहता है, उसे यदि तालिका के रूप में प्रदर्शित किया जाये तो उसे हम व्यक्तिगत पूर्ति तालिका कहते हैं।

| वस्तु की कीमत प्रति इकाई (₹) | पूर्ति मात्रा (Q) |
|---|---|
| 2 | 10 |
| 4 | 20 |
| 6 | 30 |
| 8 | 40 |
| 10 | 50 |

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

## बाजार पूर्ति तालिका (Market Supply Schedule)

बाजार में सभी फर्में अथवा विक्रेता मिलकर विभिन्न कीमतों पर बाजार में कुल कितनी मात्रा बेचने को तैयार है, इसका निर्धारण एक तालिका में प्रदर्शित बाजार पूर्ति तालिका करती है।

इस प्रकार बाजार पूर्ति तालिका सभी प्राय बाजार में किसी वस्तु का उत्पादन या आपूर्ति करने वाली सभी फर्मो की पूर्ति के जोड़ से है।

| प्रति इकाई कीमत | विक्रेता A | विक्रेता B | बाजार पूर्ति (A +B) |
|---|---|---|---|
| 2 | 10 | 5 | 15 |
| 4 | 20 | 10 | 30 |
| 6 | 30 | 15 | 45 |
| 8 | 40 | 20 | 60 |
| 10 | 50 | 25 | 75 |

## पूर्ति वक्र (Supply Curve)

THE ECONOMICS GURU

पूर्ति तालिका का वक्र के माध्यम से प्रदर्शित करना पूर्ति व कहलाता है।

EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

**पूर्ति वक्र दो प्रकार का होता है:**

1. व्यक्तिगत पूर्ति वक्र
2. बाजार पूर्ति वक्र

## व्यक्तिगत पूर्ति वक्र (Individual Supply Curve)

व्यक्तिगत पूर्ति तालिका को वक्र पर प्रदर्शित करने पर व्यक्तिगत पूर्ति वक्र प्राप्त होता है।

| कीमत प्रति इकाई (₹) | पूर्ति मात्रा (Q) |
|---|---|
| 2 | 10 |
| 4 | 20 |
| 6 | 30 |
| 8 | 40 |
| 10 | 50 |

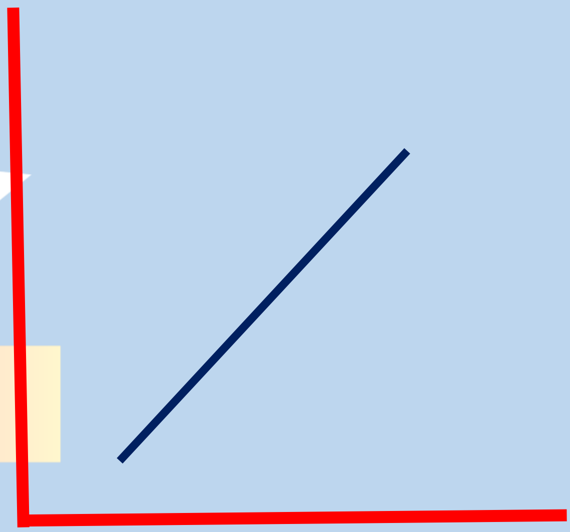

## बाजार पूर्ति वक्र (Market Supply Curve)

बाजार पूर्ति तालिका को ग्राफ पेपर पर अंकित करके बाजार पूर्ति बक्र प्राप्त किया जा सकता है।

| प्रति इकाई कीमत | विक्रेता A | विक्रेता B | बाजार पूर्ति (A +B) |
|---|---|---|---|
| 2 | 10 | 5 | 15 |
| 4 | 20 | 10 | 30 |
| 6 | 30 | 15 | 45 |
| 8 | 40 | 20 | 60 |
| 10 | 50 | 25 | 75 |

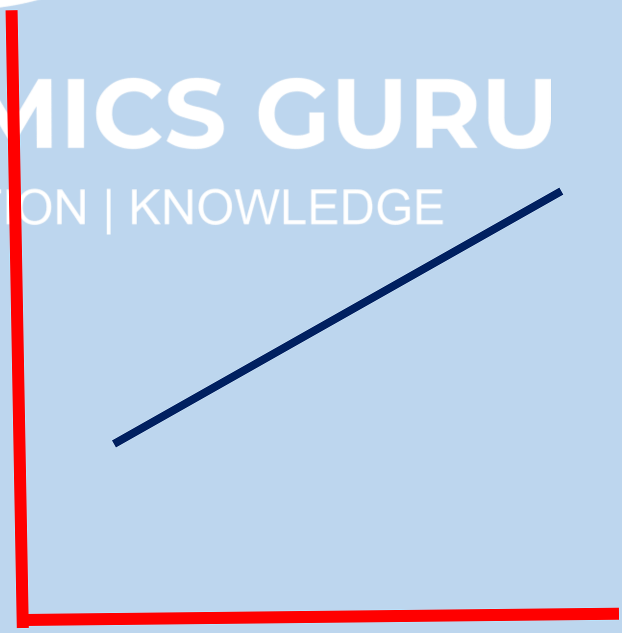

## पूर्ति फलन या पूर्ति को निर्धारित करने वाले घटक

वस्तु की पूर्ति एवं इसके निर्धारक तत्वों के बीच कार्यात्मक संबंध को पूर्ति फलन कहा जाता है।

**Sx = f(Px, Pr, Pf, T, N, G, Ex, Gp)**

Sx – बस्तु की पूर्ति ; Px - वस्तु की कीमत; Pr - संबंधित वस्तुओं की कीमत;

Pf - उत्पादन साधनों की कीमत; T - उत्पादन तकनीक; N - फर्मो की संख्या

G - फर्म का उद्देश्य; Ex - भविष्य में संभावित कीमत; Gp - सरकारी नीति

## वस्तु की पूर्ति के निर्धारक घटक

**वस्तु की कीमत -** किसी वस्तु की पूर्ति तथा कीमत में प्रत्यक्ष संबंध होता है। सामान्य दशाओं में वस्तु की कीमत बढ़ने से वस्तुओं की पूर्ति बढ़ती है तथा कीमत कम होने से वस्तुओं की पूर्ति घटती है।

**संबंधित वस्तुओं की कीमत -** किसी वस्तु विशेष की पूर्ति अन्य संबंधित वस्तुओं की कीमत से अप्रत्यक्ष रूप से संबंधित होती है। जैसे चावल की कीमत में वृद्धि होने से गेहूं की पूर्ति गिर जाती है।

**उत्पादन साधनों की कीमत-** उत्पत्ति के साधनों की कीमत बढ़ने पर उत्पादन लागत में वृद्धि होती है जिससे उत्पादों का लाभ घटता है और वे उत्पादन कम कर देते हैं, जिससे आपूर्ति भी कम होती है।

**तकनीकी स्तर-** तकनीकी स्तर में परिवर्तन से नवीन एवं कम लागत वाली उत्पादन तकनीकों का आविष्कार होता है जिससे उत्पादन लागत में कमी होती है और वस्तु की पूर्ति में वृद्धि।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

**फर्मो की संख्या**- किसी वस्तु की बाजार पूर्ति फर्मो की संख्या पर भी निर्भर करती है। फर्मो की संख्या अधिक होने पर पूर्ति अधिक होती है।

**फर्म का उद्देश्य-** यदि फर्म का उद्देश्य लाभ को अधिकतम करना है तो वह केवल अधिक कीमत पर ही पूर्ति अधिक करेंगे। इसके विपरीत यदि फर्म का उद्देश्य बिक्री या उत्पादन को अधिकतम करना है तो वह कम कीमत पर भी अधिक पूर्ति करेंगे।

**भविष्य में संभावित कीमत-** निकट भविष्य में वस्तु की कीमत में कमी होने की संभावना होने पर वर्तमान में वस्तुओं की पूर्ति बढ़ जाती है।

**सरकारी नीति**- सरकार की कर या अनुदान संबंधी नीतियों का वस्तु की बाजार पूर्ति पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।

## पूर्ति का नियम (Law of Supply)

पूर्ति के नियम के अनुसार, अन्य बातें सामान्य रहने पर वस्तु की कीमत वृद्धि पूर्ति को बढ़ाएगी तथा वस्तु कीमत में कमी पूर्ति को घटाएगी।

*इस प्रकार वस्तु की कीमत तथा वस्तु की पूर्ति में प्रत्यक्ष और सीधा संबंध पाया जाता है।*

**प्रो. मार्शल** के अनुसार, "पूर्ति का नियम यह बताता है कि अन्य बातें समान रहने पर जितनी कीमत अधिक होती है, उतनी ही पूर्ति अधिक होती है। इसके विपरीत वस्तु की कीमत जितनी कम होती है, उसकी पूर्ति भी उतनी ही कम होती है"

## पूर्ति के नियम की मान्यताएँ

1. बाजार में क्रेताओं और विक्रेताओं की आय स्तर में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए।
2. स्थानापन्ननो की कीमत में कोई परिवर्तन नहीं होने चाहिए।
3. उत्पत्ति के साधनों की कीमत स्थिर रहनी चाहिए।
4. तकनीकी ज्ञान का स्तर स्थिर रहना चाहिए।
5. सरकारी नीती में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए।
6. क्रेता तथा विक्रेता की रूचि, आदत, फैशन आदि में परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

## पूर्ति के नियम के अपवाद

- कृषि वस्तुओं पर यह नियम अनिवार्य रूप से लागू नहीं होता।
- नाशवान वस्तुओं पर पूर्ति का नियम लागू नहीं होता।
- सामाजिक प्रतिष्ठा वाली वस्तुओ में भी यह नियम लागू नहीं होता।

## पूर्ति में परिवर्तन (Change in Supply)

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

पूर्ति में परिवर्तन मुख्य रूप से दो कारणों से होता है:

1. कीमत में परिवर्तन के कारण पूर्ति वक्र पर संचलन
2. कीमत के अतिरिक्त अन्य तत्वों में परिवर्तन के कारण पूर्ति वक्र का खिसकाव

## कीमत में परिवर्तन के कारण पूर्ति वक्र पर संचलन

अन्य बातें सामान रहने पर कीमत में परिवर्तन होने से पूर्ति में परिवर्तन होते रहते हैं। यह परिवर्तन पूर्ति के नियम के अनुरूप होते है, जैसे कीमत में कम होने पर पूर्ति में कमी और कीमत के बढ़ने पर पूर्ति में वृद्धि।

यह परिवर्तन दो प्रकार से होता है:

### पूर्ति का विस्तार और पूर्ति का संकुचन

## पूर्ति का विस्तार (Extension of Supply)

अन्य बातें सामान रहने पर जब किसी वस्तु की कीमत बढ़ने पर उसकी पूर्ति बढ़ जाती है तो इस बढ़ती हुई पूर्ति को पूर्ति का विस्तार कहते हैं। इस अवस्था में पूर्ति वक्र ऊपर की ओर संचलित होता है।

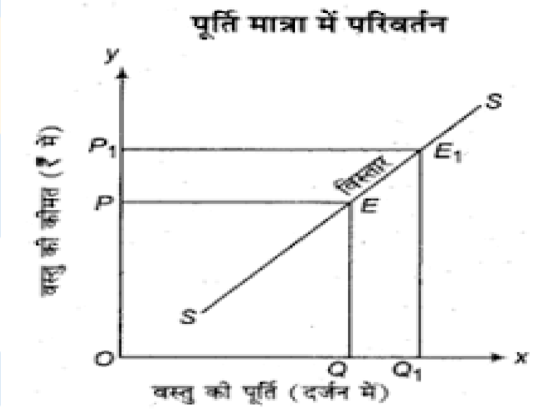

चित्र 'अ' पूर्ति का विस्तार

## पूर्ति का संकुचन (Contraction of Supply Curve)

अन्य बातें सामान रहने पर जब किसी वस्तु की कीमत के कम होने के फलस्वरूप उसकी पूर्ति कम हो जाती है तो पूर्ति में होने वाली कमी को पूर्ति का संकुचन कहते हैं। इस अवस्था में पूर्ति बकरे नीचे की ओर संचालित होता है।

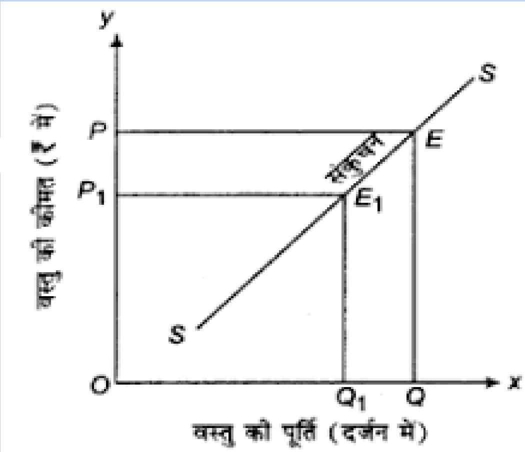

चित्र 'ब' पूर्ति का संकुचन

# कीमत के अतिरिक्त अन्य तत्वों में परिवर्तन के कारण पूर्ति वक्र का खिसकाव

कीमत के अतिरिक्त अन्य कारक यह तत्व जैसे तकनीकी सुधार, यातायात के साधनों का विकास, आय में वृद्धि आदि में परिवर्तन होने पर वस्तु में भी परिवर्तन होता है। इस प्रकार की परिवर्तन से पूर्ति वक्र अपने स्थान से दायें या बाईं ओर खिसक जाता है।

## यह परिवर्तन दो प्रकार से होता है:

पूर्ति में वृद्धि तथा आपूर्ति में कमी

### पूर्ति में वृद्धि (Increase in Supply)

बस्तु की कीमत सामान रहने पर यदि किसी वस्तु की पूर्ति बढ़ जाती है या कीमत कम होने पर पूर्ति सामान रहती है तो दोनों ही परिस्थितिया पूर्ति में वृद्धि को बताता है।

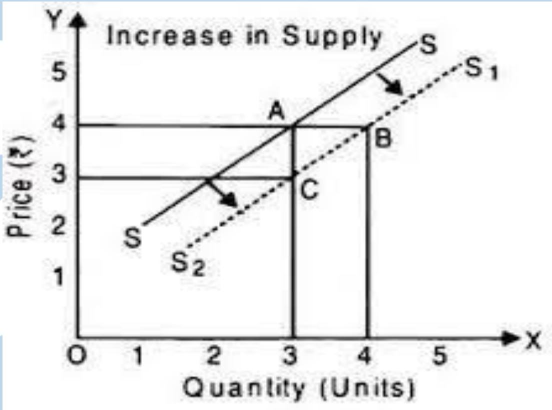


**पूर्ति में वृद्धि के कारण**

- तकनीकी प्रगति
- उत्पादन साधनों की कीमतों में कमी
- स्थानापन्न वस्तुओं की कीमतों में कमी
- उत्पादकों के उद्देश्य में परिवर्तन
- उद्योग में फर्मो की संख्या में वृद्धि
- भविष्य में कीमत घटने की संभावना

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

- करों में कमी
- अनुदान में वृद्धि

## पूर्ति में कमी (Decrease in Supply)

वस्तु की कीमत सामान रहने पर यदि किसी बस्तु की पूर्ति कम हो जाती है अथवा कीमत बढ़ने पर भी पूर्ति सामान्य रहती है तो इस परिवर्तन को पूर्ति में कमी कहा जाता है।

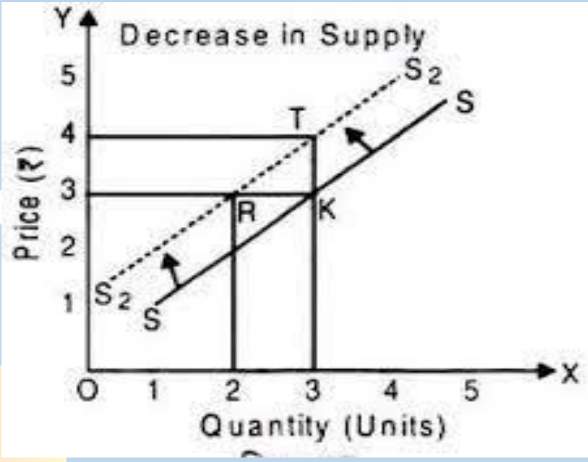


## पूर्ति में कमी के कारण

- मशीनें एवं तकनीक पुरानी होने के कारण उत्पादन लागत में वृद्धि
- उत्पादन साधनों की कीमत वृद्धि के कारण उत्पादन लागत में होने वाली वृद्धि
- स्थानापन्न वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि
- उद्योग में फार्मों की संख्या में कमी
- इस निकट भविष्य में वस्तु की कीमत बढ़ने की संभावना
- फर्म के उद्देश्य में परिवर्तन

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

# पूर्ति की लोच (Elasticity of Supply)

***अर्थ:***

पूर्ति की लोच किसी वस्तु की कीमत में होने वाले परिवर्तन के परिणामस्वरूप उसकी पूर्ति में होने वाले परिवर्तन की माप है।

***यदि अन्य बातें सामान रहे*** **तो वस्तु की कीमत में परिवर्तन के सापेक्ष वस्तु की पूर्ति में कितना परिवर्तन होगा इसकी माप को पूर्ति की लोच कहा जाता है।**

## ***परिभाषाएं***

***मार्शल*** के अनुसार, "पूर्ति की लोच से अभिप्राय कीमत में परिवर्तन के प्रतिक्रिया स्वरुप पूर्ति की मात्रा में होने वाले परिवर्तन से होता है"।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

***सैम्युल्सन*** के अनुसार, "पूर्ति की लोच कीमत में होने वाले परिवर्तन के फलस्वरूप पूर्ति में होने वाले परिवर्तन की प्रतिक्रिया की मात्रा है"।

**प्रो. बिलास** के अनुसार, "पूर्ति की लोच से अभिप्राय वस्तुओं की पूर्ति में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन को कीमत में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन से भाग देने से है"।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि,

**पूर्ति की कीमत लोच किसी वस्तु की कीमत में प्रतिशत परिवर्तन के कारण आपूर्ति में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन की माप है।**

$$\text{पूर्ति की लोच} = \frac{\text{वस्तु की पूर्ति में अनुपातिक परिवर्तन}}{\text{वस्तु की कीमत में आनुपातिक परिवर्तन}}$$

## पूर्ति की लोच के प्रकार/ श्रेणियां

पूर्ति लोच की श्रेणियों को पांच भागों में बांटा जा सकता है:

1. पूर्णतया लोचदार पूर्ति (Es = ∞)
2. इकाई से अधिक लोचदार पूर्ति (Es > 1)
3. इकाई लोचदार पूर्ति (Es = 1)
4. इकाई से कम लोचदार पूर्ति या बेलोचदार पूर्ति (Es < 1)
5. पूर्णतया बेलोचदार पूर्ति (Es = 0)

## पूर्णतया लोचदार पूर्ति (Es = ∞)

जब कीमत में परिवर्तन ना होने पर भी अथवा अत्यंत सूक्ष्म परिवर्तन होने पर भी पूर्ति में बहुत अधिक परिवर्तन हो जाता है। तब वस्तु की पूर्ति लोच पूर्णतः लोचदार होती है।

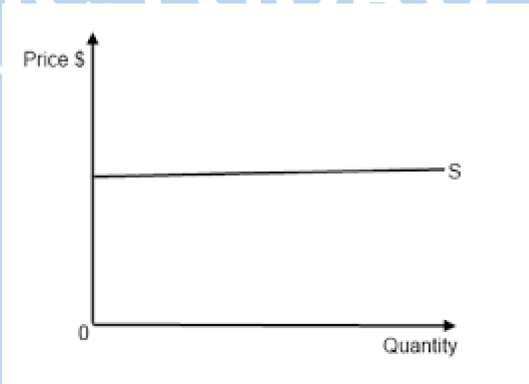


THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION

## इकाई से अधिक लोचदार पूर्ति (Es > 1)

जब किसी वस्तु की पूर्ति में प्रतिशत परिवर्तन कीमत में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन से अधिक होता है, तब पूर्ति की लोच इकाई से अधिक होती है।

**उदाहरण**

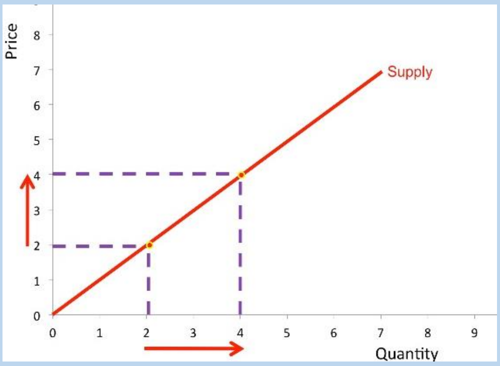


## इकाई लोचदार पूर्ति (Es = 1)

जब किसी वस्तु की पूर्ति में ठीक उसी अनुपात में परिवर्तन होता है जिस अनुपात में कीमत परिवर्तन हुआ है तब वस्तु की पूर्ति लोच इकाई के बराबर होती है।

**उदाहरण**

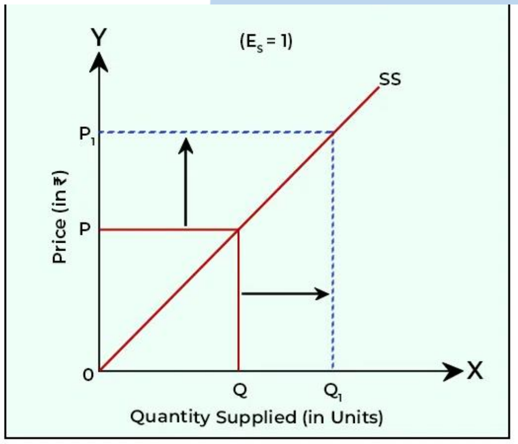

## इकाई से कम लोचदार पूर्ति अथवा बेलोचदार पूर्ति (Es < 1)

जब किसी वस्तु की पूर्ति में आनुपातिक परिवर्तन कीमत के अनुपातिक परिवर्तन से कम होता है तब इसे इकाई से कम लोचदार पूर्ति कहते हैं।

**उदाहरण:**

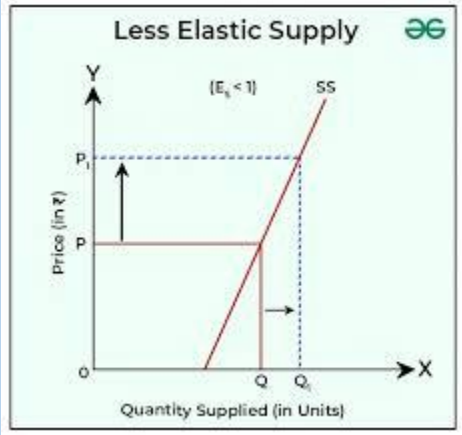


## पूर्णतः बेलोचदार पूर्ति (Es = 0)

जब वस्तु की कीमत में परिवर्तन होने पर भी पूर्ति में कोई परिवर्तन नहीं होता तब पूर्ति की लोच पूर्णतः बेलोचदार होती है।

**उदाहरण**

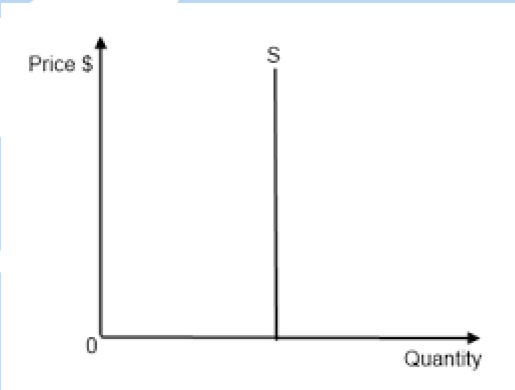


THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION

# पूर्ति लोच को प्रभावित करने वाले कारक

## वस्तु की प्रकृति

टिकाऊ वस्तुओं की पूर्ति की लोच अपेक्षाकृत लोचदार होती है। इसके विपरीत शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तुओं की पूर्ति अपेक्षाकृत बेलोचदार होती है। क्योंकि कीमत में परिवर्तन के अनुसार पूर्ति को घटाया या बढ़ाया जाना कठिन होता है

## उत्पादन लागत

यदि उत्पादन में वृद्धि करने पर औसत लागत में तेजी से वृद्धि होती है तो ऐसी स्थिति में पूर्ति की लोच कम होगी।

## भावी कीमतों में परिवर्तन

यदि उत्पादक एक वस्तु की भावी कीमतों में वृद्धि की आशा करते हैं, तो वे वस्तुओं की वर्तमान पूर्ति में कमी कर देंगे। जिसके परिणामस्वरूप पूर्ति बेलोचदार हो जाएगी

## प्राकृतिक बाधाएं

पूर्ति की लोच को आप प्राकृतिक घटक भी प्रभावित करते हैं। क्योंकि प्राकृतिक कारणों से भी कई वस्तुओं की पूर्ति नहीं बढ़ाई जा सकती।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

## उत्पादन की तकनीक

यदि उत्पादन तकनीक पूंजी प्रधान व जटिल है तो पूर्ति बेरोजगार होगी। इसका कारण यह है कि कीमत में होने वाले परिवर्तन के अनुसार पूर्ति में सरलता से परिवर्तन करना संभव नहीं है।

## जोखिम सहन करने की क्षमता

उद्यमी की जोखिम सहने की क्षमता पर भी पूर्ति की लोच प्रभावित करती है। यदि उपक्रमी जोखिम उठाने के लिए तैयार है तो पूर्ति लोचदार होगी। यदि वह जोखिम उठाना नहीं चाहता तो पूर्ति बेलोचदार होगी।

## समय तत्व

पूर्ति की लॉज पर समय तत्व का भी प्रभाव पड़ता है। जैसे:

*अति अल्प काल* में पूर्ति पूर्ण या बेलोचदार होती है।

*अल्पकाल* में पूर्ति को वर्तमान उत्पादन क्षमता तक बढ़ाया जा सकता है, लेकिन पूर्ति कम लोचदार होती है।

*दीर्घकाल* में पूर्ति लोचदार होगी। क्योंकि दीर्घकाल में पूर्ति को आसानी से घटाया या बढ़ाया जा सकता है।

## पूर्ति लोच की माप (Measure of Elasticity of Demand)

प्राय: पूर्ति की लोच मापने के लिए आनुपातिक या प्रतिशत वृद्धि का प्रयोग किया जाता है।

रीति में,

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

पूर्ति की लोच मापने के लिए पूर्ति में होने वाले अनुपातिक या प्रतिशत परिवर्तन को कीमत में होने वाले आनुपातिक या प्रतिशत परिवर्तन से भाग दे दिया जाता है।

सूत्र,

**पूर्ति की लोच** = $\frac{\text{वस्तु की पूर्ति में अनुपातिक परिवर्तन}}{\text{वस्तु की कीमत में आनुपातिक परिवर्तन}}$

$$Es = \frac{\Delta Q}{\Delta P} \times \frac{P}{Q}$$

***उदाहरण:*** किसी वस्तु की ₹12 प्रति कई कीमत पर 500 इकाइयों की पूर्ति की जाती है। इसकी कीमत बढ़कर ₹15 प्रति इकाई हो जाने पर पूर्ति की मात्रा बढ़कर 650 इकाईया हो जाती है। पूर्ति की कीमत लोच के ज्ञात कीजिए।

**उदाहरण** किसी वस्तु की ₹5 प्रति इकाई कीमत पर 600 इकाइयों की पूर्ति की जाती है। यदि इसकी कीमत बढ़कर ₹6 प्रति इकाई हो जाती है। तो पूर्ति की मात्रा 25% बढ़ जाती है। पूर्ति की कीमत लोच ज्ञात कीजिए।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

अर्थशास्त्र के सभी विषयों एवं कक्षाओं के नोट्स, प्रश्नोत्तर, सैंपल पेपर, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, विगत वर्षों के प्रश्नपत्र, अभ्यास प्रश्नपत्र (हिंदी या अंग्रेजी माध्यम) के PDF आपको www.theeconomicsguru.com पर मिल जायेंगे।

इसके साथ ही सभी हिंदी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के लिए Free **LIVE CLASS** भी उपलब्ध है, हमारे **YOUTUBE CHANNEL "THE ECONOMICS GURU"** पर । अभी **subscribe** कर लीजिये और ज्यादा से ज्यादा **शेयर** कर दीजिये अपने दोस्तों के बीच।

किसी भी प्रकार की समस्या के लिए आप हमसे सम्पर्क कर सकते है, YOUTUBE के कमेंट बॉक्स में कमेन्ट करें या वेबसाइट के Email वाले Option में जाकर **Email** करे या WhatsApp कर सकते है Website में लिंक दिया गया है।

धन्यवाद

नकुल ढाली

The Economics Guru

लाभार्थी बोर्ड:

CBSE, UK Board, UP Board, Bihar Board, MP Board, CG Board, Rajasthan Board, Haryana Board

साथ ही **BA; B.COM; MA** के सभी SEMESTER लिए भी अध्ययन सामग्री उपलब्ध है।

अभी VISIT करें www.theeconomicsguru.com

EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

**Subscribe** my **YOUTUBE** channel **THE ECONOMICS GURU**

**Follow me:**

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

**Facebook**- *Nakul Dhali*

**Instagram**- *@dhali_sir*